"रूपावतार और कातन्त्र व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन"

संस्कृत विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा
(2018–19)

शोध निर्देशक :

डॉ. अभिमन्यु
असि. प्रोफेसर संस्कृत विभाग
कला संकाय

शोधार्थिनी

प्रियंका ओझा
संस्कृत विभाग

संकाय प्रमुख

प्रो0जे. के.वर्मा
कला संकाय

विभागाध्यक्ष

प्रो0 (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग, कलासंकाय

अध्ययन का क्षेत्र–संस्कृत व्याकरण

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282005

रूपावतार और कातन्त्र व्याकरण का

तुलनात्मक अध्ययन

व्याकरण शास्त्र का संस्कृत भाषा में जितना विस्तृत रूप से सूक्ष्म अध्ययन हुआ है, उतना अन्य किसी भाषा में नहीं हुआ। किसी भी भाषा के अंग–प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन व्याकरण के द्वारा ही सम्भव है। व्याकरण ही वह विद्या है, जिसके द्वारा हम शुद्ध बोल, शुद्ध पढ़ और शुद्ध लिख सकते हैं। किसी भी भाषा के बोलने, पढ़ने वलिखने के निश्चित नियमों का पालन करना आवश्यक है। भर्तृहरि विरचित वाक्यपदीयम् में व्याकरण का उद्‌देश्य साधु या शिष्ट प्रयोगोचित शब्दों का ज्ञान करना, अशिष्ट शब्दों का निराकरण, प्रकृति–प्रत्यय के ज्ञान के द्वारा शब्दों के वास्तविक रूप को स्पष्ट तथा भाषा के स्वरूप पर नियंत्रण रखना है। व्याकरण को वेदांग का सर्वप्रमुख अंग माना गया है। व्याकरण से सम्बन्धित एक श्लोक प्रस्तुत है–

यस्य षष्ठी चतुर्थी च विहस्य च विहाय च

यस्याहं च द्वितीया स्याद् द्वितीया स्यामहं कथम्।।

जो व्यक्ति विहस्य को षष्ठी विभक्ति तथा विहाय को चतुर्थी विभक्ति का, अहम् व कथम् को द्वितीया विभक्ति का मानता है। ऐसे अल्पज्ञानी व्यक्ति की पत्नी (द्वितीया) कैसे बन सकती हूँ? अर्थात् जिस व्यक्ति को इतना सामान्य ज्ञान भी नहीं है कि किसी पद के अन्त में 'स्य' लगने से वह षष्ठी विभक्ति नहीं कहलायेगा और ना ही 'आय' लगने से चतुर्थी विभक्ति का हो जायेगा। विहस्य और विहाय विभक्ति नहीं है अपितु अव्यय है। इनके रूप नहीं चलते। इसी प्रकार 'अहम्' व 'कथम्' में अन्त में 'म्' होने से वह द्वितीया विभक्ति के नहीं माने जायेंगे। ऐसे अल्पज्ञानी से, जिसे व्याकरण का सामान्य ज्ञान भी नहीं है, स्त्रियाँ विवाह करना भी स्वीकार नहीं करतीं। कहा भी गया है कि यदि कोई व्यक्ति विद्वान् बनने में असमर्थ है, फिर भी उसे व्याकरण इनता पढ़ना चाहिए, जिससे वह 'स' और 'श' में अन्तर समझ सके और वह 'स्वजन' का श्वजन (कुत्ता),

'सकल' अर्थात् सम्पूर्ण का 'शकल' (टुकड़ा) और सकृत् (एक बार) का शकृत् (शौच, विष्ठा) न पढ़े।

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।

स्वजनो श्वजनो सा भूत, सकलं शकलं सकृत्शकृत्।।

व्याकरण की रचना पाँच अवयवों के द्वारा ही पूर्ण होती है। पाणिनीय व्याकरण में पाँच अवयव हैं। ये पाँच अवयव इस प्रकार हैं–अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, धातुपाठ, उणादिपाठ, गणपाठ व लिंगानुशासन। पाणिनीय व्याकरण में ये पाँचों अवयव होने के कारण वह पूर्ण व्याकरण है। वैदिक और लौकिक संस्कृत हेतु पाणिनि ने अष्टाध्यायी लिखा। उन्होंने लगभग 4000 सूत्रों की रचना की। पाणिनि के उन सूत्रों पर वार्तिक की कात्यायन ने रचना की और उन वार्तिकों पर पंतजलि ने महाभाष्य लिखा। उन सूत्रों व उनके उदाहरण आदि को समझाने के लिए कई वृत्ति ग्रन्थों की रचना हुई। जिनमें से छठी शताब्दी की काशिका वृत्ति प्रमुख है। पाणिनि की परम्परा में पढ़ने वाले लोगों को पाणिनि व्याकरण कठिन लगने लगा क्योंकि पाणिनि अष्टाध्यायी में सूत्र प्रक्रिया क्रम से नहीं है जिस कारण लोगों को वह कष्ट साध्य लगने लगता है। उदाहरणार्थ, अष्टाध्यायी में समास प्रकरण द्वितीय अध्याय में और समासान्त प्रत्यय पंचम अध्याय में प्राप्त होते हैं। यदि पाठक अष्टाध्यायी को द्वितीय अध्याय तक ही पढ़कर छोड़ देता है तो उसका पढ़ना व्यर्थ चला गया क्योंकि उसे समास प्रकरण का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। अतः इन कठिनताओं को देखते हुए कई लघु व्याकरण प्रक्रिया क्रमानुसार लिखे गये। जिनमें सूत्रों के क्रम को बदलकर अपने अनुकूल कर लिया। इन्हीं रचनाओं में सबसे पहला शर्ववर्मा का कातन्त्र व्याकरण था। यह पाणिनि से इतर परम्परा थी। यह व्याकरण सदृश विशाल एवं क्लिष्ट नहीं है अपितु इसका उद्‌देश्य जन साधारण को सरल माध्यम के द्वारा संस्कृत व्याकरण का ज्ञान कराना था। कातन्त्र व्याकरण का अन्य नाम 'कौमार' तथा 'कालापक' भी है। इसके विषय में निम्नलिखित कथा प्रचलित है–दक्षिण में आन्ध्रवंशी सातवाहन नामक राजा राज्य करता था। एक दिन वह अपनी रानी के साथ जलक्रीड़ा में रत था। राजा के जल अधिक फेंकने पर रानी ने प्रार्थना की –"मोदकं (मा + उदकं) देहि

राजन्!" अज्ञानी राजा ने रानी को लड्डू (मोदक) दे दिये। तदनन्तर ज्ञात होने पर राजा लज्जित हुआ और पण्डित शर्ववर्मा से प्रार्थना की कि वह संस्कृत व्याकरण के ज्ञान का सरलतम उपाय बतायें। शर्ववर्मा ने कार्तिकेय की उपासना की। कुमार ने व्याकरण का ज्ञान शर्ववर्मा को दिया। इसलिए इसका नाम 'कौमार' पड़ा। कलापी (मयूर) कार्तिकेय का वाहन था और वही सूत्रों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बना था। अतः इस व्याकरण का नाम 'कलाप' भी पड़ गया। लोग पाणिनीय व्याकरण को छोड़कर कातन्त्र आदि प्रक्रिया क्रमानुसारी व्याकरणों की ओर आकृष्ट होने लगे।

इन ग्रन्थों के अध्ययन से पाठक जितना अध्ययन करके छोड़ देता, उसे उतना सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जब धीरे–धीरे लोग पाणिनीय व्याकरण को छोड़कर कातन्त्र व्याकरण का अध्ययन करने लगे तो पाणिनीय वैयाकरणों ने अपनी परम्परा की रक्षा के लिए पाणिनि के सूत्रों के क्रम को बदलकर कुछ प्रक्रिया ग्रन्थों की रचना की जिनमें से धर्मकीर्ति (ग्यारहवीं शताब्दी) द्वारा रचित रूपावतार सबसे प्रथम है।

जिसका उद्देश्य जन सामान्य को पाणिनीय व्याकरण के प्रति अभिमुख करना तथा अत्यन्त सरल रीति से व्याकरण सिखाना था।

प्राक्तन कार्य सर्वेक्षण–

1. कातन्त्र व्याकरण और पाणिनि व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन, सिंह हरदीप सिंह, पंजाब विश्वविद्यालय–2016
2. कातन्त्रपाणिनिव्याकरणयोः तद्धितप्रत्ययनां तुलनात्मकं समीक्षणम्, स्वप्न माझी, बर्धमान विश्वविद्यालय–2018

सर्वेक्षण के विभिन्न माध्यमों द्वारा अन्वेषण करने पर उपर्युक्त विषय पर समग्र रूप से प्रक्रियात्मक पक्षों को लेकर इस तरह का कोई कार्य अभी तक नहीं हुआ है। शोधार्थी प्रक्रियात्मक

अध्ययन के साथ–साथ पूर्ववर्ती एवं उत्तरवर्ती ग्रन्थकारों पर क्या प्रभाव पड़ा है तथा भाषा एवं साहित्य पर इन ग्रन्थों का क्या अवदान है? इसका भी अध्ययन करेंगी।

प्रविधि–

शोध प्रबन्ध लिखते समय तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।

विषय चयन का उद्देश्य–

व्याकरण में मेरी अत्यधिक रुचि होने के कारण मैंने रूपावतार और कातन्त्र व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन अपने शोधविषय के रूप में चुना है। मेरे इस विषय चयन का उद्देश्य यह है कि उस समय पाणिनि का सर्वांगपूर्ण व्याकरण उपलब्ध होने के उपरान्त भी ऐसे क्या महत्वपूर्ण कारण थे कि जन सामान्य की पाणिनि व्याकरण से अरुचि हो गई और पाणिनीयेतर व्याकरण ग्रन्थों में प्रवृत्ति हुई। कालान्तर में कातन्त्र आदि प्रक्रियात्मक ग्रन्थों को ही आधार बनाकर पाणिनी व्याकरण के आचार्यों ने भी प्रक्रियात्मक ग्रन्थ बनाये इसकी समीक्षा करना, दोनों ही प्रकरणात्मक और प्रक्रियात्मक शैलियों में आये सारल्य और काठिन्य का अध्ययन करना और क्या अत्यल्प समय में व्याकरण जैसे दुरुह विषय का ज्ञान प्राप्त हो सकता है? आदि तथ्यों का विश्लेषण करना है।

शोधार्थी के द्वारा प्रक्रियात्मक अध्ययन के साथ–साथ पूर्ववर्ती एवं उत्तरवर्ती ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों पर क्या प्रभाव पड़ा है तथा भाषा एवं साहित्य पर इन ग्रन्थों का क्या अवदान है? इसका भी अध्ययन किया जाएगा।

विद्वानों से विनम्र निवेदन है कि शोधार्थी को प्रकृत शोध कार्य करने की अनुमति एवं मार्गदर्शन प्रदान करें।

प्रकृत विषय का अध्यायविभाजन निम्नवत् है–

रूपावतार और कातन्त्र व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय–विभाजन

प्रथम अध्याय–संस्कृत व्याकरण–सामान्य परिचय

(क) प्रक्रिया परम्परा उद्भव एवं विकास

(ख) पाणिनीयेतर व्याकरण ग्रन्थ एवं उनके कर्ता

(ग) पाणिनि प्रक्रिया ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार।

द्वितीय अध्या–अध्येय ग्रन्थों का विस्तृत परिचय

(क) रूपावतार–आचार्य धर्मकीर्ति

(ख) कातन्त्र व्याकरण–आचार्य शर्ववर्मा

तृतीय अध्याय–अध्येय ग्रन्थों की संरचनात्मक तुलना

(क) प्रकरण

(ख) सूत्र

(ग) सूत्र संख्या

(घ) वार्तिक

(ङ) कारिका

(च) उदाहरण

(छ) शैली आदि की दृष्टि से।

चतुर्थ अध्याय–अध्येय ग्रन्थ–प्रक्रियात्मक तुलना

(क) संज्ञा

(ख) सन्धि

(ग) समास

(घ) कारक

(ङ) कृदन्त

(च) तद्धित

(छ) तिङन्त

पंचम अध्याय–अध्येय ग्रन्थों पर अन्य व्याकरण ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का प्रभाव।

(क) पूर्ववर्ती ग्रन्थ एवंग्रन्थकारों का प्रभाव

(ख) उत्तरवर्ती ग्रन्थ एवं ग्रन्थकरों का प्रभाव

षष्ठम अध्याय–अध्येय ग्रन्थों का अवदान

(क) भाषिक अवदान

(ख) साहित्यिक अवदान

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

<u>संदर्भ ग्रन्थ सूची</u>

1. **अष्टाध्यायी (अनुवृत्ति–वृत्ति, उदाहरण, वार्तिक–गणपठादि सूची संहिता)** अभिमन्यु, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, 2011
2. **अष्टाध्यायी और उनके भाष्यकार पंतजलि**–पाठक, राजकुमार, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2005
3. **आधुनिक शोध प्रणाली**–मिश्र, महेन्द्र कुमार, मार्क पब्लिशर्स जयपुर–2009
4. **अनुसंधान परिचय**–पारसनाथ अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण–1973
5. **काशिकावृत्ति (1–2 भाग)–वामनजयादित्य**–सम्पादक–शर्मा, आर्येन्द्र, संस्कृत परिषद्, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 1969
6. **काशिकावैयाकरण सिद्धान्तकौमुधोस्तुलनात्मकमध्ययनम्**–वेदालंकार, रघुवीर, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, वि0सं0–2034
7. **पाणिनीय प्रक्रियाग्रन्थपंचक मीमांसा**–अभिमन्यु, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली–2014
8. **वाक्यपदीयम्**–भर्तृहरि,सम्पादक–अय्यर, के.एस. डेक्कन कॉलेज, पूना–1966
9. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद इतिहास**–उपाध्याय, बलदेव, उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
10. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद इतिहास**–पाण्डेय, ओमप्रकाश, उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ–1997
11. **संस्कृतव्याकरण का उद्भव एवं विकास**–वर्मा, सत्यकाम, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली–1992
12. **संस्कृतव्याकरण शास्त्र का इतिहास**–मीमांसक, युधिष्ठिर रामलाल कपूर, ट्रस्ट सोनीपत, हरियाणा–1994